संपादकीय

दिल्ली में आर-पार की जंग

भारत की राजधानी दिल्ली जंग का मैदान बन गई है। इस जंग में विपक्षी राजनीतिक दलों के साथ-साथ कॉकरोच, वकील, पत्रकार और आम नागरिक बड़ी संख्या में शामिल होते जा रहे हैं। कुछ दिन पहले तक इस बात का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता था, इतनी जल्दी इतनी तेजी के साथ इस तरह की जंग के हालात बनेंगे। सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच में सत्ता की लड़ाई मानी जा सकती है, लेकिन आम आदमी, अधिवक्ता, पत्रकार, युवा और बच्चे यदि इस लड़ाई में शामिल हो रहे हैं, तो यह समझना होगा कि कहीं कोई ना कोई बात तो है, जो इतने बड़े पैमाने पर लोग सड़कों पर आकर अपने अस्तित्व के लिये यह लड़ाई लड़ रहे हैं। रामायण में गोस्वामी तुलसीदास जी ने स्पष्ट रूप से लिखा है, समरथ को नहीं दोष गुसाईं, होई वही जो राम रचि राखा। राजधानी दिल्ली में जिस तरह के हालात बने हुए हैं। लोकतांत्रिक व्यवस्था में जिस तरह से संवैधानिक संस्थाएं सरकार के पक्ष में आकर खड़ी हो गई हैं। यह सरकार की समर्थता है। सरकार को दोष भी नहीं दिया जा सकता है। ऐसी स्थिति में अब लोग अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ने के लिए सड़कों पर एकजुट हो रहे हैं। यदि यह कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

संवैधानिक संस्थाओं के प्रमुख पदों पर जो लोग बैठे हैं, उनके बारे में एक धारणा बन गई है, वह सब एक विचारधारा के लोग हैं। जिन्हें सुनियोजित रूप से प्रमुख पदों पर बिठाया गया है। यहां तक कि स्कूल-कॉलेज, विश्वविद्यालयों में भी जो नियुक्तियां पिछले वर्षों में की गई हैं, वह भी एक विचारधारा के लोगों की हैं। अब हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट की बार में भी यह चर्चा होने लगी है। भारतीय अधिवक्ता परिषद से जुड़े एक विचारधारा के लोग है। उन्हें ही सरकारी वकील और जजों के रूप में नियुक्त किया गया है। पिछले कुछ वर्षों से न्यायपालिका भी सरकार को बचाने का काम कर रही है। जितनी भी जांच एजेंसियां हैं, संवैधानिक पदों पर बैठे हुए अधिकारी हैं, वह सब सरकार के इशारे पर काम कर रहे हैं। सत्ता पक्ष के लिये अलग और विपक्ष के लिये अलग नियम-कानून हैं। लोगों को कहीं से भी न्याय मिलता हुआ नहीं दिख रहा है। जिसके कारण अब सड़कों पर जंग की स्थिति देखने को मिल रही है। सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयुक्त की नियुक्ति, उसके बाद एसआईआर, चुनाव के पूर्व एवं चुनाव के दौरान जो भी मामले हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में गए हैं, उन सब मामलों में न्यायपालिका ने सरकार को प्रत्यक्ष रूप से फेवर किया है। तारीख पर तारीख बढ़ाकर मामले को टाल दिया गया, सरकार जो चाहती थी, वह उसने कर लिया, संविधान और कानून का कोई पालन नहीं हुआ। हाईकोर्ट और सुप्रीमकोर्ट द्वारा जो भी आदेश पारित किए गए, उसमें सरकार के लिए एक चोर दरवाजा खोल दिया गया। इस चोर दरवाजे से सरकार बाहर निकलकर वह सब काम करती रही, जो वह करना चाहती है। सुप्रीम कोर्ट ने रविवार के दिन विशेष सुनवाई की, उसके पहले भी जो सुनवाई की थी और सुप्रीम कोर्ट ने जो आदेश दिया था, उसका पालन दिल्ली पुलिस ने नहीं किया। हर आदेश में सुप्रीम कोर्ट या हाईकोर्ट कानून व्यवस्था के नाम पर अथवा आधा अधूरा फैसला देकर सरकार के लिए रास्ता छोड़ देती है। इसका दुरुपयोग सरकार और उसकी एजेंसियां कर रही हैं। हाल ही में जिस तरह से वकीलों, पत्रकारों को दिल्ली में अरेस्ट किया गया, उनके साथ दुर्व्यवहार किया गया। सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद भी ट्रेन बंद कर दी गई। मेट्रो स्टेशन बंद कर दिए गए। 4 किलोमीटर क्षेत्र दिल्ली में प्रतिबंध लगाया था, लेकिन दिल्ली पुलिस ने दिल्ली के अधिकांश हिस्सों में बैरिकेड लगा दिए, प्रदर्शनकारियों को दौड़ा-दौड़ा कर मारा गया। दिल्ली पुलिस द्वारा अवैध तरीके से प्रदर्शनकारियों को हिरासत में लिया गया। हिरासत में लिये गए लोगों को कई घंटे तक बसों में घुमाया गया। उन्हें मल-मूत्र त्यागने की भी सुविधा नहीं दी गई। हिरासत में जो हजारों लोग बंद थे, उन्हें खाना-पानी भी नहीं दिया गया। यह स्थिति पहली बार दिल्ली में देखने को मिली।

दिल्ली में 35 हजार से ज्यादा अर्ध सैनिक बलों को तैनात किया गया है, जिसके कारण अब लोगों में सरकार के खिलाफ विद्रोह देखने को मिला रहा है। जिन लोगों को कोई मतलब नहीं था, वह भी नाराज होकर सड़कों पर निकल रहे हैं। न्यायपालिका और सरकार के खिलाफ अब वकील और बार से भी आवाज आने लगी है। सारे विपक्षी नेता राष्ट्रपति सहित हर दरवाजे को खटखटाकर आ गए हैं। अब अंतिम दरवाजा न्यायपालिका का है। सुप्रीमकोर्ट में याचिकाओं पर सुनवाई हो रही है, मुख्य न्यायाधीश ने नेता प्रतिपक्ष और विपक्षी सांसदों से मिलने से मना कर दिया है। सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट से जिस तरह के फैसले आ रहे हैं। उससे आम जनता को न्याय मिलता हुआ दिख नहीं रहा है। सुप्रीम कोर्ट जो आदेश देती है, उसका पालन ना तो दिल्ली पुलिस कर रही है, नाही केंद्र सरकार कर रही है। ऐसी स्थिति में न्यायपालिका के प्रति अविश्वास दिन-प्रतिदिन बढ़ता चला जा रहा है। दिल्ली में प्रदर्शन के दौरान पुलिस बल जिस तरह का पक्षपात कर रहा है। बांसुरी स्वराज के नेतृत्व में भाजपा महिला मोर्चा का प्रदर्शन प्रतिबंधित स्थान पर हो रहा है। दिल्ली पुलिस चुप है। वर्तमान स्थिति को जल्द नहीं संभाला गया, तो सुप्रीम कोर्ट के आदेश सरकार मानेगी? इसको लेकर सभी के दिमाग में संदेह उत्पन्न हो रहा है। दिल्ली प्रेस क्लब में दिल्ली पुलिस घुस गई। आगे आने वाले दिन कैसे होंगे, भगवान ही मालिक है। जिस तरह के हालात बन गये है, वह एक तरह से गृह युद्ध जैसे हैं। यदि ऐसा हुआ, तो इसका बड़ा भारी नुकसान होना तय है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जिस तरह से भारत की साख दांव पर लगी हुई है, उसको देखते हुए यह कहने में जरा भी संकोच नहीं है, आने वाले समय में भारत को भारी दुष्परिणाम भोगना पड़ेंगे।

अंतरद्वंद्व

'अंधेरा किए पड़ा है! आज डिनर के लिए मेस में भी नहीं आया? '

'मन में बड़ी उथल-पुथल चल रही है, यार! खाना खाने की इच्छा नहीं हुई। हमें प्रशिक्षण प्राप्त करते चौथा साल पूरा होने वाला है। एक चौथाई रहेंगे, अन्य को बाहर का रास्ता दिखा दिया जाएगा। कोई भी हो सकता है, मैं, तू। पहले शान से कहा जाता था, 'मैं फौजी हूँ।' परंतु अब हमें ठेके पर भर्ती मजदूर होने जैसा लग रहा है। '

'ठीक कहा दोस्त! मीडिया के हवाले से उड़ती-उड़ती खबर आई थी कि सेना पचास से साठ प्रतिशत और नेवी तीन-चौथाई प्रशिक्षित जवानों को रखना चाहते हैं। पर सरकार उनकी माने तब तो? सेवा के तीनों अंगों में से जितने रिटायर हो रहे हैं, उसकी एक तिहाई ही भर्ती हो रही है। सेना के लिए जन और धन, दोनों की ही कटौती की जा रही है। क्या यह देश की सुरक्षा के साथ खिलवाड़ नहीं है? ' 'सिर्फ देश ही नहीं, नौजवानों के भविष्य के साथ भी खिलवाड़ हो रहा है। अग्निवीर के हाथों में, कोई भी खाता-पीता परिवार अपनी बेटी का भविष्य नहीं? सौंपना चाहता। उनकी सीधी सच्ची बात, 'बच्चे! पहले चार साल काम करके अपनी नौकरी पक्की होने दो, फिर फैसला करेंगे।' माता-पिता को भी समझ में नहीं आ रहा कि उनका बच्चा आत्मनिर्भर हुआ भी है या नहीं? ' 'चार साल की ऊहापोह के बाद स्थाई हुए तो बढ़िया वरना हममें से अधिकांश पुनः बेरोजगारों की कतार में खड़े नजर आएँगे। दी गई एकमुश्त राशि से कितने साल जीवन-यापन कर पाएँगे? ' 'ऐसी स्वार्थी व्यवस्था से उत्पन्न फौजी क्या उतनी ही शिद्दत से मातृभूमि की रक्षा के लिए कृत संकल्प रह पायेंगे, जितने पुराने फौजी हुआ करते थे? इसके अलावा, फौजी ट्रेनिंग के कौशल से लैस अग्निवीर, नौकरी जाने की हताशा में कहीं गलत राह चुन लें, तो समाज के लिए गंभीर चुनौतियाँ खड़ी कर सकते हैं । ' 'आशंका सच साबित हुई तो 'फौजी' शब्द की गरिमा को भी बट्टा लग सकता है! '

'हम्ममम। '

नीना सिन्हा, पटना, बिहार, 6290273367

कहानी

रेत का महल

जून की तपती दोपहर हो या जुलाई की उमस भरी शाम, सुनील का पूरा दिन सीढ़ी पर ही बीतता था। कभी किसी चौथी मंज़िल की खिड़की के बाहर लटककर, कभी किसी तंग छत पर झुककर, वह पुराने यंत्र खोलता, उनके भीतर जमी धूल झाड़ता, उलझे तार जोड़ता और ठंडक का द्रव भरता। शाम होते होते हाथ काले पड़ जाते, कमीज़ पसीने से चिपक जाती और कमर में ऐसी ऐंठन उठती कि सीधा खड़ा होना भी कठिन लगता। पर घर की चौखट पर पहुँचते ही जब काजल मुस्कुराकर दरवाज़ा खोलती, तो उसे लगता कि दिन भर की सारी थकान किसी ने हाथ बढ़ाकर उतार ली है। काजल सचमुच बहुत सुंदर थी। गोरा रंग, लंबे घने बाल और आँखों में ऐसी चमक कि मोहल्ले की औरतें भी एक बार मुड़कर उसे देख लेती थीं। उसे सजना सँवरना अच्छा लगता था। उसे महंगी जगहों पर घूमना पसंद था और अपनी तस्वीरें सबको दिखाना भी। सुनील यह सब जानता था और इसीलिए अपनी हैसियत से कहीं ऊपर जाकर उसकी हर इच्छा पूरी करने में लगा रहता था। नया मोबाइल आया तो उसके लिए, जिसका दाम सुनील की आधी तनख़्वाह के बराबर था। नामी दुकानों के कपड़े आए, जिनके लिए उसने अपने साथियों से उधार लिया। जन्मदिन पर शहर के सबसे चमकदार भोजनालय में रात्रिभोज रखा गया, जहाँ एक थाली का दाम सुनील की पूरे दिन की कमाई से अधिक था। उस रात वह बार बार देयक को देखता रहा और हर बार मन ही मन हिसाब लगाकर चुप हो जाता। पर काजल की आँखों में खुशी देखकर वह स्वयं से कहता, कोई बात नहीं, महीने के अंत में दो चार काम और पकड़ लूँगा। उसने कभी जताया नहीं कि वह थक रहा है। रात को जब काजल सोने से पहले अपने मोबाइल में दूसरों की चमकती तस्वीरें देखती, तो सुनील चुपचाप पास बैठकर अपने पैरों की सूजन पर सरसों का तेल मलता रहता। काजल कभी कभी पूछ लेती, तुम इतना क्यों खटते हो। सुनील हँसकर कहता, तेरे लिए। काजल मुस्कुरा देती, पर उस मुस्कान में अब पहले जैसी गर्माहट नहीं बची थी। दरअसल काजल के भीतर कुछ बदलने लगा था। जिन चीज़ों को पाकर वह पहले खिल उठती थी, वे अब उसे छोटी लगने लगी थीं। जिस सहेली के पति ने उसे विदेश की यात्रा करवाई थी, उसकी तस्वीरें देखकर काजल के मन में कड़वाहट उठती। वह सोचती, क्या मेरा रूप इसी छोटे से किराए के घर में गल जाने के लिए है। सुनील की कमाई से उसके शौक कभी पूरे नहीं होंगे, यह विचार धीरे धीरे उसके भीतर जड़ पकड़ता गया। वह सुनील से कम बोलने लगी। उसके काले हाथों से उसे घिन आने लगी और उसके पसीने की गंध से वह मुँह फेर लेने लगी। सुनील यह सब देखता था, पर समझ नहीं पाता था। वह सोचता कि शायद उसी की कमी है, शायद उसे और मेहनत करनी चाहिए। इसलिए उसने सुबह जल्दी निकलना और रात को देर से लौटना शुरू कर दिया। छुट्टी के दिन भी वह किसी पड़ोसी का पुराना यंत्र सुधारने बैठ जाता, ताकि चार पैसे और जुड़ सकें। उसे नहीं पता था कि जिस घर के लिए वह अपनी देह गला रहा है, उस घर से उसकी पत्नी का मन कब का उठ चुका है। एक शाम उसने काजल के लिए बाज़ार से गरम जलेबियाँ बँधवाईं, जो उसे बचपन से प्रिय थीं। घर पहुँचा तो काजल सजी हुई बाहर जाने को तैयार खड़ी थी। सुनील ने दोना आगे बढ़ाया तो उसने बिना देखे कहा, अभी मन नहीं है, देर हो रही है। दरवाज़ा बंद हुआ और जलेबियाँ मेज़ पर पड़े पड़े ठंडी हो गईं। सुनील ने उन्हें अकेले बैठकर खाया। मिठास फीकी लगी, पर उसने स्वयं से यही कहा कि आज उसे कोई आवश्यक काम होगा। इन्हीं दिनों काजल की जान पहचान अमन से हुई। अमन शहर के एक बड़े व्यापारी का इकलौता बेटा था। लंबी गाड़ी, ऊँची इमारत में बड़ा घर और जेब में हमेशा बेहिसाब रुपये। एक मित्र के समारोह में दोनों मिले। अमन ने काजल को देखा तो देखता ही रह गया। बातचीत बढ़ी, फिर मुलाकातें होने लगीं। काजल ने अमन से एक झूठ कहा, जो उसने बड़ी सहजता से गढ़ लिया था। उसने कहा कि वह अकेली रहती है, माता पिता नहीं रहे और अपने बलबूते पर जीवन चला रही है। उसने माँग में सिंदूर भरना छोड़ दिया था और हाथ की अंगूठी उतारकर कपड़ों के बीच छिपा दी थी। दिन भर वह सुनील के जाने की प्रतीक्षा करती और फिर सज धजकर अमन से मिलने निकल जाती। अमन ने उसे वही जीवन दिया जिसका स्वप्न काजल बरसों से देखती आई थी। शहर के सबसे महंगे भोजनालयों में रात्रिभोज, बड़े बाज़ारों में खरीदारी, हीरे जड़े गहने और विदेश घुमाने के वादे। अमन कहता, देखना काजल,

अगले बरस हम पेरिस चलेंगे। काजल की आँखें चमक उठतीं। उसे लगता कि उसकी असली दुनिया अब शुरू हुई है और पिछला सब कुछ किसी बुरे स्वप्न जैसा था। कभी कभी बड़ी गाड़ी की पिछली पंक्ति में बैठे हुए काजल के मन में एक पल को सुनील का चेहरा कौंध जाता था। उसे अपराध का भाव घेरता, पर वह उसे तुरंत झटक देती। वह स्वयं को समझाती कि हर किसी को अच्छा जीवन जीने का अधिकार है और उसने कोई पाप नहीं किया। एक झूठ को बचाने के लिए सौ झूठ और बोलने पड़ते हैं, यह बात उसे तब समझ नहीं आई थी। घर लौटकर वह सुनील के सामने थकी हुई बनकर बैठ जाती। कहती कि सहेली के यहाँ गई थी, देर हो गई। सुनील थाली परोसकर उसके सामने रख देता। वह कुछ नहीं पूछता था। उसे पूरा विश्वास था कि उसकी पत्नी उससे छल नहीं कर सकती। पर कभी कभी रात के सन्नाटे में उसे बेचैनी होती। काजल के कपड़ों से आती अनजानी सुगंध, उसकी कलाई पर अचानक आ गई नई घड़ी, ये छोटी छोटी बातें उसके मन में काँटे की तरह चुभतीं। पर वह स्वयं को समझा लेता कि मेरा ही मन छोटा होता जा रहा है। कुछ महीने यूँ ही बीत गए। फिर एक दिन भाग्य ने अपना खेल खेला। अमन के घर का वातानुकूलक बिगड़ गया। गर्मी इतनी थी कि पूरा घर भट्टी बन चुका था। उसने उसी संस्था को दूरभाष किया जहाँ सुनील काम करता था। संस्था ने उस दोपहर जिस कारीगर को भेजा, वह सुनील ही था। पता थमाया गया तो उसने बस इतना देखा कि शहर के सबसे ऊँचे भवन की आठवीं मंज़िल है। उसने औज़ारों का थैला कंधे पर लटकाया और चल पड़ा। आठवीं मंज़िल पर पहुँचकर उसने घंटी बजाई। भीतर से पैरों की आहट आई, दरवाज़ा खुला और सामने काजल खड़ी थी। अमन के घर में, अमन की दी हुई रेशमी पोशाक पहने, गले में नया हार डाले। एक क्षण के लिए दोनों के बीच समय थम गया। काजल के चेहरे का रंग उड़ गया। सुनील की आँखें उस पर टिकी रहीं, पर उसके होंठ नहीं हिले। तभी भीतर से अमन की आवाज़ आई, 'कौन है काजल, कारीगर आ गया क्या?' वह बैठक में आया और सुनील को देखकर बोला, 'आओ भाई, यंत्र इसी कमरे में बंद पड़ा है, ज़रा देख लो।' अब तीनों एक ही कमरे में थे। अमन को कुछ पता नहीं था। काजल की साँसें अटकी हुई थीं और सुनील के भीतर तूफ़ान उठ रहा था। पर उसने तुरंत कुछ नहीं कहा। वह चुपचाप सीढ़ी लगाकर यंत्र खोलने लगा। हाथ वही थे, काम वही था, पर आज हर पेंच कसते हुए उसे लग रहा था मानो वह अपने ही मन के पेंच कस रहा हो। काजल कोने में खड़ी काँप रही थी। अमन कुर्सी पर बैठा अपने मोबाइल में कुछ देख रहा था। कमरे में केवल औज़ारों की खट खट गूँजती रही। कुछ देर बाद सुनील ने नीचे उतरकर हाथ पोंछे और बड़ी शांत आवाज़ में अमन से पूछा, 'साहब, एक सवाल पूछूँ?' अमन ने मुस्कुराकर सिर हिलाया। सुनील बोला, 'साहब, अगर आपको पता चले कि जिससे आप प्यार करते हैं, वह आपसे केवल पैसों के लिए प्यार कर रही है, तो आप क्या करेंगे? ' अमन हँस पड़ा। उसने काजल की ओर प्यार भरी नज़र से देखा और कहा, 'यह भी कोई पूछने की बात है? मैं ऐसी लड़की को उसी क्षण छोड़ दूँगा। मुझे धोखेबाज़ लड़की नहीं चाहिए। मैं सब सह सकता हूँ, छल नहीं।' काजल का गला सूख गया। उसने सुनील की ओर देखा, पर सुनील की आँखों में क्रोध नहीं था। वहाँ केवल एक गहरी, ठहरी हुई उदासी थी। सुनील ने धीरे से सिर हिलाया और कहा, 'तो फिर देख लीजिए साहब, यह मेरी पत्नी काजल है। पिछले 3 बरस से मेरा ब्याह हुआ है इससे। ' अमन के चेहरे का रंग सफ़ेद पड़ गया। कुछ पल तक वह मानो सुन ही नहीं सका कि क्या कहा गया है। फिर उसने काजल की ओर देखा। उसकी आँखों में अब प्यार नहीं था, केवल अविश्वास था। काजल फूट फूटकर रोने लगी। वह भागकर अमन के पास आई और उसके हाथ थामने लगी। 'अमन, मेरी बात सुनो, मैं मजबूर थी, मुझे अच्छा जीवन चाहिए था, मैं बस एक अच्छे जीवन के लिए तरस गई थी... ' अमन ने झटके से हाथ छुड़ा लिया और उसकी बात बीच में ही काट दी। बोला, 'मुझे गरीब लड़की से कोई कठिनाई नहीं थी काजल। मैं तुम्हें तब भी अपनाता। मुझे कठिनाई झूठ से है। आज तुमने अपने पति को धोखा दिया और मुझसे सच छिपाया। कल कोई और अमीर मिल जाएगा तो मुझे भी छोड़ दोगी। यह प्यार नहीं है, तुम पैसों से प्यार करती हो। ' काजल के पास कोई उत्तर नहीं था। वह वहीं भूमि पर बैठ गई। अमन सुनील की ओर मुड़ा और हाथ जोड़कर बोला, 'भाई, मुझे क्षमा करना। मुझे नहीं पता था कि वह किसी की पत्नी है। तुम्हारी ईमानदारी को मेरा सलाम। तुमने सच्चा प्यार किया है।' सुनील ने कुछ नहीं कहा। वह बस हल्के से सिर झुकाकर रह गया। अ ंत में काजल दोनों ओर से अकेली रह गई। अमन ने कठोर स्वर में कहा कि वह इसी क्षण उसके घर से चली जाए। उसने काजल की ओर दोबारा नहीं देखा। सुनील ने अपना काम पूरा किया, यंत्र चलाकर जाँचा कि ठंडी हवा आने लगी है, औज़ारों का थैला उठाया और बिना कुछ कहे सीढ़ियों से नीचे उतर गया। उसने पलटकर भी नहीं देखा। न क्रोध था, न कोई ताना। बस एक चुप थकान थी, जो उसके कंधों पर पहले से कहीं भारी हो गई थी। काजल देर तक वहीं बैठी रही। फिर वह भी बाहर निकली, तन पर केवल वही कपड़े जो उसने पहने थे। सड़क पर आई तो तपती हवा ने उसका चेहरा झुलसा दिया। कहाँ जाए, यह वह तय नहीं कर पा रही थी। पुराने घर का रास्ता याद आया, पर वहाँ किस मुँह से जाए। जिस अंगूठी को उसने छिपाया था, वह अब भी उसकी मुट्ठी में दबी थी। उसने उसे देखा तो उसकी आँखें फिर भर आईं। उस रात काजल सीढ़ियों पर ही बैठी रही। कई बरस बाद उसे अपने सारे बीते दिन याद आए। सुनील का पसीने से भीगा चेहरा, उधार की थाली, पैरों पर मला जाता सरसों का तेल। जब वह थककर लौटता था, तब भी उसके होंठों पर कोई शिकायत नहीं होती थी। उसे पहली बार समझ आया कि जो उसे छोटा लगता था, वही सबसे बड़ा था। उस दिन काजल समझ गई कि पैसों से महंगे कपड़े तो आ जाते हैं, गाड़ियाँ और बड़े घर भी आ जाते हैं, पर भरोसा एक बार चला जाए तो फिर लौटकर नहीं आता। जो हाथ उसके लिए दिन रात पसीना बहाते थे, उन्हीं को उसने काला कहकर ठुकराया था। और जिस चमक के पीछे वह भागी, वह एक झूठ के सहारे टिकी थी, जो पहली ही कड़ी परीक्षा में पूरी तरह बिखर गया।

महेन्द्र तिवारी
पालम कॉलोनी, नई दिल्ली - मोबाइल: 9989703240

बाल कहानी

पूर्वी और जादुई गुड़िया

एक बार की बात है। एक माता-पिता थे और उनकी एक लड़की थी, जिसका नाम पूर्वी था। एक दिन तीनों दशहरे के मेले में घूमने गए थे। पूर्वी को वहाँ एक दुकान पर एक गुड़िया पसंद आई, लेकिन वह गुड़िया ?500 की थी। पूर्वी ने अपनी मम्मी से कहा, 'मम्मी, मुझे यह गुड़िया दिला दो।

' मम्मी ने कहा, 'मेरे पास पैसे नहीं हैं। ' फिर पूर्वी ने अपने पिताजी से कहा, 'पापा, मुझे यह गुड़िया चाहिए। ' पिताजी बोले, 'यह गुड़िया बहुत महँगी है। रहने दो, हमारे पास पैसे नहीं हैं। ' पूर्वी बहुत उदास हो गई। उसके मम्मी-पापा पूर्वी को लेकर घर चले गए। लेकिन वह गुड़िया कोई साधारण गुड़िया नहीं थी। वह एक जादुई गुड़िया थी, जो सब कुछ सुन सकती थी। उसने पूर्वी की सारी बातें सुन ली थीं। जादुई गुड़िया को यह अच्छा नहीं लगा कि पूर्वी इतनी उदास होकर और रोते हुए घर जा रही थी। जादुई गुड़िया ने सोचा, 'क्यों न मैं भी पूर्वी के साथ उसके घर चली जाऊँ? ' यह

सोचकर वह गुड़िया चुपके से उनकी थैली में चली गई और उनके साथ-साथ उनके घर पहुँच गई।

वह जादुई गुड़िया पूर्वी की अलमारी में चली गई। जब पूर्वी कपड़े बदलने के लिए अपनी अलमारी खोलने लगी, तो उसने अलमारी में वही गुड़िया देखी, जिसे वह मेले में खरीदना चाहती थी। पूर्वी ने सोचा, 'यह गुड़िया तो हम लेकर आए ही नहीं थे। फिर यह यहाँ कैसे आ गई? ' पूर्वी ने अपने मम्मी-पापा से पूछा, 'क्या आप गुड़िया लेकर आए थे? क्या आपने मुझे सरप्राइज दिया है? ' दोनों ने कहा, 'नहीं, हमने तो कोई गुड़िया नहीं ली। ' लेकिन पूर्वी यही सोच रही थी कि शायद मम्मी-पापा ने उसे सरप्राइज दिया होगा। वह उस गुड़िया को देखकर बहुत खुश हुई। तभी गुड़िया पूर्वी से बातें करने लगी। गुड़िया ने कहा, 'हेलो पूर्वी! मैं हूँ तुम्हारी दोस्त। मैं तुम्हारे पास आ गई हूँ। मुझे तुम्हें उदास देखकर अच्छा नहीं लगा, इसलिए मैं तुम्हारे साथ चली आई। ' पूर्वी हैरान रह गई कि यह गुड़िया बोलती भी है! पूर्वी और गुड़िया दोनों बहुत अच्छे दोस्त बन गए थे। गुड़िया ने पूर्वी से कहा, 'जब भी तुम्हें किसी चीज़ की ज़रूरत हो, तुम मुझे हर बात बताना। मैं तुम्हारी बहुत मदद करूँगी।

' एक दिन पूर्वी ने गुड़िया से कहा, 'मुझे एक बहुत अच्छा टॉय सेट चाहिए। क्या तुम मेरे लिए टॉय सेट ला दोगी? ' गुड़िया ने कहा, 'हाँ, क्यों नहीं! ' इसके बाद जादुई गुड़िया ने अपनी जादुई शक्तियों से पूर्वी के लिए एक टॉय सेट ला दिया। जादुई गुड़िया पूर्वी की हर ख्वाहिश पूरी कर देती थी। पूर्वी अपनी जादुई गुड़िया को पाकर बहुत खुश थी।]

: लक्ष्मी विजेन्द्र जैन
कोटा, राजस्थान[9588245386]

कहानी

खामोशी के भीतर

बड़ी अजीब दुनियां में जी रहा हूं साहब , जहां आज के समय बहुत ही ज्यादा लोग खास तौर से बुजर्ग लोग, वैसे तो उम्र का यहां कोई मायना नहीं रहा आज बहुत ही कम उम्र के लोग भी हैं जो बहुत खामोशी से जी रहे हैं जबकि उनके भीतर इतना विद्रोह है कि सोचा नहीं जा सकता, अक्सर ऐसे लोग ज्यादा तरह या सभी अच्छे इंसान होते है और इंसान का आज के कलयुग में जीना कहने की आवश्यकता नहीं समझता हूं कितना मुश्किल होता होगा जो कल्पना से भी परे है पर जी रहे साहब जैसे तैसे सांसों को खींचते हुए, कितना कुछ प्रतिदिन उन्हें आक्रोश पैदा करता होगा और वो चुप चाप उसे बिना किसी को कुछ अहसास के पी जाते हुए खामोश रहते हैं सैकड़ों विवशता होती हैं विद्रोह को खामोशी से पी कर जीने की यहां तक यह खामोशी अक्सर दस्तक देती हैं कि एक दिन इसी खामोशी को ओढ़े दुनियां छोड़ चले जाते है किसी को नहीं पता क्यों मरा सब अपनी अपनी सोच से सोचे करते हैं क्यों मरा बाकी परम सत्य तो राम जाने या वह जो मर गया चुप चाप बिना किसी से कोई शिकायत किए ऐसे लोगों को वो लोग नहीं जानते जो है न जानने की कोई चाह होती हैं जो खुद में जीते है खैर साहब समझने वालों के लिए इतना ही बहुत है ना समझने वाले तो वैसे भी पड़ेगे नहीं गलती से पढ़ भी लिया तो उन्हें कोई फ़र्क नहीं पड़ता हैं

डॉ रामशंकर चंचल
झाबुआ मध्य प्रदेश

कहानी

और करो मनमानी

छोरा-छोरी ब्याह करने को मरे जा रहे थे। रईस मां-बाप भी शादी का मुहूर्त निकलवाने को उतावले थे। एक दिन जुट गए दोनों खानदान एक ही जगह पर। बुलवा लिए गए दोनों पक्षों के गुणी और ज्ञानी पंडित जी। आरंभ हो गया दोनों की जन्म-कुंडली के मिलान का कार्यक्रम। दोनों पंडितों ने देर तक की माथापच्ची। अंततः सुना दिया अपना मिला-जुला निर्णय। निर्णय भी पूरी तरह से नकारात्मक। कारण दोनों के कुल 9 गुण मिलना। मतलब कुल गुणों का केवल एक चौथाई। विद्वानों ने स्पष्ट रूप से बेमेल बता दी जोड़ी। नकार दीं श्रेष्ठ व शुभ मांगलिक विवाह की सारी संभावनाएं। लड़का-लड़की एक दूसरे को ताक रहे थे। मां-बाप आपस में मंत्रणा में जुटे थे। मंशा फलादेश को येन-केन- प्रकारेण बदल डालने की थी। हर प्रतिकूल को अपने लिए अनुकूल बनाने की। दूसरी ओर पंडित जी थे कि टस से मस होने को तैयार नहीं। आनन-फानन में तय हुआ कि ग्रह-मिलान नामों के आधार पर कराया जाए। नामों के आधार पर फिर से लगाया गया गणित। दस मिनट बाद नतीजा आ गया सामने। पता चला कि साढ़े 11 गुण ही मिल पा रहे हैं। मतलब, पहले निष्कर्ष से ढाई गुण अधिक। डगमगाती आस की नैया को मिला थोड़ा सा सहारा। पार्टियों को चाहिए था हर हाल में, हर क़ीमत पर किनारा। फैसला किया गया कि अब गुण बोलते नाम से मिलाए जाएंगे। विद्वानों ने बेमन से सुनी अड़ियल परिवारों की बात। नए सिरे से आरंभ हुआ मिलान का खेल।

मरियल संबंध का आंकड़ा 15 गुणों पर जा कर अड़ियल घोड़े की तरह अड़ गया। सवाल उसे कम से कम साढ़े 17 गुण तक लाने का था। दोनों परिवार मनमानी को लेकर पूरी तरह एकमत थे। ग्रहों के बीच का गृहयुद्ध उनके लिए कोई मायने रखता ही नहीं था। अंततः लड़के और लड़की के घरेलू नाम भी बदल डाले गए। काल्पनिक नामों का तालमेल फलादेश को 20 गुण तक ले जा कर ही माना। बधाइयों के शोर के बीच खुल गए पहले से लाकर रखे गए मिठाइयों के डिब्बे। कड़वे मुंह को मीठा कर पंडित जी प्रस्थान कर गए। अच्छी-खासी दक्षिणा के साथ। बीस दिन बाद देव-उठान के दिन दोनों एक भव्य समारोह में जीवन-साथी बन गए। समृद्धि के प्रदर्शन में दोनों तरफ से पानी की तरह बहा पैसा। दोनों पंडितों को तीन गुनी दक्षिणा देकर प्रसन्न किया गया। ग्रह अपनी जगह भड़के हुए थे ही। हफ़्ते भर बाद हंसी-खुशी हनीमून पर गए जोड़े की वापसी अलग मार्गों और अलग वाहनों से हुई। एक पखवाड़े से कम समय में खिंच गए दोनों पक्षों में तलवारें। टूट गया संबंध और हो गया रिश्ते-नालों का खेल खत्म। महीने भर बाद यही दोनों परिवार अपने-अपने पंडितों के साथ अलग-अलग शहरों में थे। नए रिश्ते के लिए ग्रहों को फिर से सही दिशा में लाने का खेल एक बार फिर खेला जा रहा था। वजह थी नए जोड़े में नज़र आती केमेस्ट्री और उन्हें दो से एक करने में समर्थ दोनों परिवारों की इकोनॉमी। पंडित उनकी हठीली सोच से पूरी तरह परिचित हो चुके थे। जिनकी उंगलियां ग्रहों की चाल और दोनों के हाल गिनने में अब और तेज़ी से चल रही थीं। ग्रहों का मिलान पिछली बार की तरह इस बार भी तय था।।

प्रणय प्रभात
(मध्यप्रदेश)
8959493240